International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

जौनपुर की लोक साहित्य चेतना के अन्तर्गत जौनपुर लोक में निवास करने वाली स्त्रियों के श्रृंगार–हेतु प्रचलित आभूषणों का प्रचलित लोक–गीतों में महत्व

डॉ अन्जू पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, के0डी0एस0 महाविद्यालय, पाली, जौनपुर (उत्तर प्रदेश)

जौनपुर अंचल उत्तर–प्रदेश के वाराणसी मंडल का एक जनपद है। जौनपुर जनपद की पश्चिमी सीमा पर इलाहाबाद और प्रतापगढ़, दक्षिणी सीमा पर संत रविदास नगर (भदोही) दक्षिणी पूर्वी सीमा पर वाराणसी पूर्वी सीमा पर सुल्तानपुर जनपद निश्चित करता है। ये सीमायें यद्यपि कृत्रिम है, लेकिन कुछ सीमाओं का निर्धारण प्राकृतिक नदियां करती है। जैसे दक्षिणी भाग की कुछ सीमा का निर्धारण प्राकृतिक नदियां करती है। जैसे – दक्षिणी भाग की कुछ सीमा का निर्धारण वरूणा नदी और माँगुर नदी और माँगुर नदी की एक धारा सुल्तानपुर जनपद को विभाजित करती है। माँगुर नदी कुछ दूर पर जौनपुर और आजमगढ़ की सीमा को बाँटने का काम करती है। लोक–जीवन में स्त्री एवं पुरूष द्वारा एक परिवार का निर्माण करके जीवन के सामाजिक दायित्वों को पूरा करना एक महत्वपूर्ण प्रयोजन बताया गया है। स्त्री एवं पुरूष प्रकृति द्वारा बनाये गये जीव प्राणी है जिनके रंग–रूप, लम्बाई–चौड़ाई, आकार–प्रकार, नैन नक्श में कोई परिवर्तन सम्भव नहीं हैं। किन्तु वस्त्रों एवं आभूषणों के माध्यम से इनके सामान्य रूप को सौन्दर्य एवं आकर्षक रूप में संवारा जाता है। पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियाँ आभूषणों के प्रति ज्यादा स्नेह एवं आकर्षण प्रदर्शित करती हैं जौनपुर की लोक साहित्य चेतना अध्ययन के समय शोधार्थिनी ने देखा कि स्त्रियाँ अपने आभूषणों के प्रति ज्यादा सजग रहती है।

समय–समय पर रस्म के समय परिवार द्वारा नेग लेने के लिए स्त्रियों से उनकी इच्छा पूछी जाती है तो चाहे वह माँ हो, बेटी हो, बहू हो, बहन हो, ननद हो, या भाभी हो, सभी के द्वारा परिवार की शक्ति के अनुसार आभूषणों के लिए स्वयं की इच्छा प्रस्तुत करती है। पुत्र जन्म से लेकर वैवाहिक आयोजन आदि संस्कारों में स्त्रियाँ नेग के लिए परिवार की शक्ति के अनुसार प्रथम दृष्टया आभूषण के प्रति स्वयं के लगाव को इच्छा के रूप में प्रदर्शित करती है। जौनपुर लोक में आभूषणों के लिए स्वर्ण एवं रजत के साथ ही ताम्र एवं पीतल के गहनों का प्रचलन सामान्यतः किया जाता है। जौनपुर लोक में स्त्रियों के आभूषण को सामान्यतः दो भागों में बाटा जा सकता है–

1– नगों से युक्त गहनें, 2– नग विहिन गहनें

नगों से युक्त आभूषण के रूप में धातुओं के साथ पत्थरों जैसे– हीरा, पन्ना, माणिक आदि बहुमुलय पत्थरों को स्वर्ण, रजत, ताम्र एवं पीतल में प्रयोग करके नाक की कील, अगूँठी, कान के झाले, कंगन, चूड़ामनी, गलाबंद, चेन के लाकेट, आदि का निर्माण किया जाता है इन आभूषणों का प्रयोग ज्योतिषाचार्य के परामर्श द्वारा ग्रहों की शांति एवं वास्तु दोष के निवारण हेतु उपयोग में लाया जाता है। इन आभूषणों को विशिष्ट विधियों के द्वारा निश्चित समय पर धारण किया जाता है इसलिए इन्हें विशिष्ट आभूषणों की संज्ञा भी दी जाती है।

नग–विहीन आभूषणों के अन्तर्गत ऐसे आभूषण जिनमें सिर्फ धातु का प्रयोग किया जाता है और वह सभी स्त्रियों के लिए उपयोग में लाया जा सकता है जिसके अन्तर्गत, नथिया, मांगटीका, पायल या पाजेब, मीना, अंगूठी, कड़ा, कंगन, पेटी, हाफकर्धनी, हाथपलानी, बाजूबन्द, मंगलसूत्र, चन्द्रहार, कील, आदि आभूषणों का प्रयोग जौनपुर लोक की अद्भुत विशेषता है। आभूषणों का व्यापार सुनारों के द्वारा किया जाता है। जौनपुर लोक निवासी सामान्यतः बेटियों के जन्म के साथ ही आभूषणों के निर्माण के प्रति सजग हो जाते है कि जिससे कि विवाह के समय बेटी को आभूषण की कोई भी कमी न होने पाये। जौनपुर लोक की मान्यता है कि बेटियां लक्ष्मी के समान होती है। इसीलिए दीपावली के अवसर पर धनतेरस के दिन बेटियों के लिए निश्चित रूप से स्वर्ण या रजत धातु के आभूषणों की खरीदारी अवश्य की जाती है। जौनपुर लोक में अपनी सामर्थ्य एवं क्षमता के अनुसार प्रत्येक स्त्रियाँ स्वर्ण आभूषणों को महत्व देती है किन्तु आर्थिक स्थिति ठीक न हो तो रजत धातु के उपर स्वर्ण धातु का लेपन करवाकर प्रयोग में लाती है और इठलाती हैं। बालिका, युवतियाँ, प्रौढ़ महिलाएं, एवं वृद्व माँतायें सभी दैनिक जीवन में आभूषणों का प्रयोग करती है। विवाहित महिलाएं बिछिया (मीना), पायल, कंगन, चूड़ी, नथुनी या कील, झाला तथा मंगलसूत्र, अवश्य ही धारण करती है।

पैरों में प्रयुक्त होने वाले आभूषण सदैव ही चाँदी या रजत धातु के बनाये जाते हैं।

जौनपुर लोक में मान्यता है कि आभूषण सुख में स्त्रियों का श्रृंगार है और विपत्ति काल में परिवार के आर्थिक समृद्वि में सहायक है इस प्रकार हम कह सकते है कि जौनपुर लोक में आभूषणों का महत्व सिर्फ श्रृंगार के लिए नहीं बल्कि विपत्ति काल में सहयोग के लिए एक मजबूत एवं निवेश सुरक्षित निवेश के रूप में आर्थिक समृद्वि की एक गारंटी है।

सन्दर्भः–

1. त्रिपाठी, पं0 रामनरेश–कविता कौमुदी, भाग–5 (ग्राम गीत)
2. उपाध्याय, डॉ0 कृष्णदेव– भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन
3. आर्चर, डब्लू जी–भोजपुरी ग्राम–गीत(बिहार रिसर्च सोसाइटी पटना)

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

4. गोस्वामी तुलसीदास–रामचरित मानस
5. सिंह, ठा0 राम– चारण गीत
6. सत्यार्थी, डॉ देवेन्द्र–गिद्धा, बेला फूले आधी रात